ISSN 0975-119X

UGC-CARE GROUP I LISTED

वर्ष 12 अंक 1 जनवरी-फरवरी 2020

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

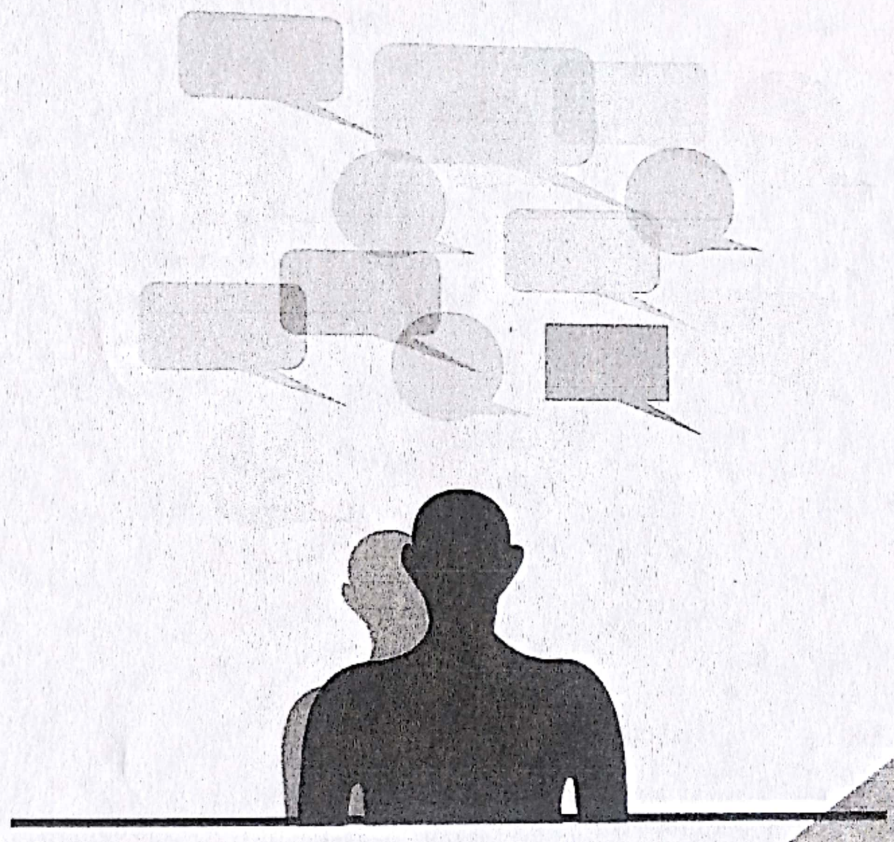

India's Leading Refereed Hindi Language Journal

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की त्रैमासिक शोध पत्रिका

संपादक

डॉ. अश्विनी महाजन

रीडर, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

दृष्टिकोण प्रकाशन

WZ-724, पालम गांव, नई दिल्ली-110045

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

स्नातक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी अध्यापकों के व्यावसायिक प्रतिबद्धता का तुलनात्मक अध्ययन—रवि; डॉ० नरेन्द्र कुमार सिंह 559
माध्यमिक स्तर पर क्षेत्र के आधार पर शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता का अध्ययन—शारदा प्रसाद सिंह; डॉ० नरेन्द्र कुमार सिंह 563
उत्तर भारत की जनजातियों में जल, जंगल एवं जमीन की समस्यायें एवं समाधान—अर्चना 567
आंचलिक उपन्यास: स्वरूप और उपकरण—डॉ० निम्मन 571
अकादमिक पुस्तकालय सेवाएं एवं ई०-संसाधन अनुप्रयोग: उत्तर प्रदेश के संदर्भ में एक अध्ययन—कुँवर संजय भारती; प्रतिमा शर्मा 574
भारतीय पत्रकारिता पर औपनिवेशिक संस्कृति का प्रभाव—मुन्ना लाल पाल 576
डॉ० जयप्रकाश कर्दम की कहानियों में नारी जीवन—श्रीमती पंकज यादव 581
वृद्ध कल्याण: चुनौतियां एवं समाधान—डॉ० शैलेन्द्र सिंह 584
दलित जीवन को उजागर करती आत्मकथा झोंपड़ी से राजभवन—डॉ० ज्योति गौतम 588
भारत की आर्थिक समीक्षा में मानव विकास का अध्ययन—इन्दु आसेरी 592
मध्यकालीन समाज में स्त्री और मीराबाई—डॉ० दीप कुमार मित्तल 595
अवध में महिला प्राथमिक शिक्षा की स्थिति—गणेश कुमार 597
महिला समर्थित अधिनियम एवं उच्च शिक्षा की महिला अध्येताओं की सचेतना—वन्दना शर्मा; प्रो० वन्दना गोस्वामी; डॉ० अजय सुराणा 602
स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता की प्रकृति—डॉ० श्रीनिवास सिंह यादव 606
भारत में महिलाओं की स्थिति और विकास का एक अध्ययन—डॉ० अनिल झा 613
आधुनिक भारतीय राजनीति में वंशवाद—दीपक कुमार राय 616
शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक मूल्यों का अध्ययन—डॉ० बृजेश कुमार पाण्डेय 619
चन्द्रकिरण सौनरेक्सा के कहानी संग्रह 'आधा कमरा' की समीक्षा: एक दृष्टि—विनोद कुमार सिंह 623
...गव ध्यान: योगोपनिषदों के आलोक में—नम्रता चौहान; डॉ० शाम गणपत तिखे 626
...चक्रोशीय स्वप्रबन्धन: एक योगिक दृष्टि—अखिलेश कुमार विश्वकर्मा; डॉ० शाम गणपत तिखे; डॉ० उपेन्द्र बाबू खत्री 631
...तंत्र दर्शन में ध्यान का स्वरूप—धनंजय कुमार जैन; डॉ० उपेन्द्र बाबू खत्री 636
...रत में पर्यावरण और जलवायु से जुड़े खतरे—डॉ० राजेन्द्र प्रसाद 640
...कृत भाषा की उत्पत्ति एवं प्रवृत्ति एवं पाणिनि का योगदान—डॉ० योगिता मकवाना 642
...रीकरण के प्रभाव और प्रबंधन—रामावतार आर्य 645
...माजिक मानव मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में आज की हिन्दी कविता—प्रद्योत कुमार सिंह 648
...तीसगढ़ में पंचायती राज व्यवस्था-समस्या और समाधान—डॉ० आयाश अहमद 653
...यती राज व्यवस्था व महिला नेतृत्व—डॉ० राम नरेश टण्डन 656
...मान में नक्सलवाद: समस्या एवं समाधान—डॉ० भूपेन्द्र कुमार 659
...। स्वराज एवं ग्रामीण विकास पर महात्मा गांधी जी के विचारों की प्रासंगिकता—डॉ० विजय कुमार साहू 663
...युर्वेद के अनुसार रज:श्रवाकाल में आहार: एक अध्ययन—नेहा सैनी; डॉ० तिखे शाम गणपत 666
मध्यकालीन भारतीय समाज और गोरखनाथ—डॉ० सर्वेश चन्द्र शुक्ल 670
...ायती राज व्यवस्था एवं महिला सशक्तिकरण की अवधारणा—डॉ० प्रमोद यादव; आशीष नाथ सिंह 672
...छत्तीसगढ़ में प्रशासनिक एवं राजनीतिक व्यवस्था के संबंधों का एक व्यवहारिक अध्ययन" (राज्य मंत्रालय के विशेष संदर्भ में) 677
—डॉ० (श्रीमती) अलका मेश्राम; डॉ० डी०`एन० सूर्यवंशी; दीपा 681
...ौद्योगिकीकरण का ग्रामीण समुदाय पर प्रभाव—डॉ० जवाहर लाल तिवारी; दिनेश कुमार 686
...रायपुर जिले के विकास में नवा रायपुर अटल नगर विकास प्राधिकरण की भूमिका का एक राजनैतिक विश्लेषण 690
—डॉ० (श्रीमती) रीना मजूमदार; डॉ० प्रमोद यादव; फैसल कुरैशी
ग्रामीण विकास योजनाओं के क्रियान्वयन में जिला प्रशासन की भूमिका—डॉ० प्रमोद यादव; कमल नारायण 694
महिला आरक्षण से महिला सशक्तिकरण पर पड़ने वाले प्रभाव का एक राजनीतिक विश्लेषण
(रायपुर जिले के ग्राम पंचायतों के विशेष संदर्भ में)—डॉ० डी० एन० सूर्यवंशी; खेमप्रभा धृतलहरे 698
आर्थिक एवं सामाजिक विकास में आने वाली समस्याओं के कारण एवं निवारण में जिला प्रशासन की भूमिका
—डॉ० (श्रीमती) अलका मेश्राम; डॉ० डी० एन० सूर्यवंशी; रामकृष्ण साहू

Scanned with OKEN Scanner

माध्यमिक स्तर पर क्षेत्र के आधार पर शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता का अध्ययन

शारदा प्रसाद सिंह

शोधार्थी, शिक्षा संकाय, राजा हरपाल सिंह महाविद्यालय सिंगरामऊ, जौनपुर

डॉ० नरेन्द्र कुमार सिंह

शोध निर्देशक एवं प्राचार्य, शिक्षा संकाय, राजा हरपाल सिंह महाविद्यालय सिंगरामऊ, जौनपुर

शं

स्तुत अध्ययन में सामान्य रुप से माध्यमिक शिक्षा वह शिक्षा है जिसमे कक्षा 06 से 12 तक की शिक्षा व्यवस्था होती है नयी शिक्षा नीति 2020 ने 198 ीति 10+2+3 संरचना को अब 5+4+3+3 संरचना दिया है। इसमें पूर्व माध्यमिक से उच्च माध्यमिक तक को 3+3 में रखा गया है। इस प्रकार हमा व्यवस्था बालवाड़ी, पूर्वप्राथमिक, प्राथमिक, पूर्व माध्यमिक, माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक व्यवस्था में बँट जाती है जिसका उद्देश्य है कि बच्चा अप काल, बाल्यकाल, पूर्व किशोरावस्था तथा किशोरावस्था तक अपनी मातृभाषा, क्षेत्रीय भाषा तथा एक अन्य किसी भाषा में पारंगत हो जाय और उसक क्ति खुल जाये। माध्यमिक शिक्षा किशोरावस्था से जुड़ती है और शिक्षा वयवस्था की मेरुरज्जू होती है।इन तीनों बोर्डो की भूमिका छात्रों के सर्वांगी न में महत्वपूर्ण है। हम जानते है कि सी० बी० एस० सी० व आई० सी० एस० ई० दो मुख्य बोर्ड प्रणाली हैं जो भारत में करोड़ों छात्रों को एक गुणात्म प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। इन विषय में अभिभावकों के अलग-अलग दृष्टिकोण हैं। कुछ शिक्षकों, अभिभावकों व छात्रों के अनुसा बी० एस० सी० उत्तम बोर्ड है व कुछ के अनुसार आई० सी० एस० ई० बोर्ड । इस विषय में अभिभावक के मन में अनेक प्रश्न हैं। कुछ के अनुसा स्तर का बोर्ड उत्तम है। अतः इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुये शोधकर्त्ता चाहता है कि दोनों बोर्डो का तुलनात्मक अध्ययन किया जाना चाहिये क्रम में परिवर्तन एक सतत् प्रक्रिया है अतः सी० बी० एस० सी० व आई० सी० एस० ई० बोर्ड के द्वारा प्रत्येक वर्ष कुछ न कुछ परिवर्तन अवश्य कि है यह परिवर्तन किताबों से, कोर्स से तथा पाठ्यक्रम से सम्बन्धित होते है शिक्षण प्रक्रिया तीन ध्रुवी है इसके तीनों ध्रुव 1. शिक्षक 2. विद्यार्थी 3 क्रम है। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में शिक्षक एक महत्वपूर्ण तत्व है उसके बिना कोई शिक्षण नहीं हो सकता। पर्याप्त ज्ञान नही प्रदान किया जा सकत र विद्यार्थियों का उचित विकास करना सम्भव नहीं है। इस सन्दर्भ में ही पुरातन काल में भारतीय चिंतको ने शिक्षक को अत्यन्त आदर का स्थान दिया

मुख्य शब्दः- शिक्षण अभिक्षमता, स्वनिर्मित मापनी, अभिवृत्ति मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि, ब मूल्य इत्यादि।

प्रस्तावना- सन् 1947 ई० में जब भारत स्वतंत्र हुआ तो शिक्षा के इस महत्वपूर्ण स्तर के लिये उद्देश्यों का पुर्ननिर्धारण करने की आवश्यकता हुयी क्योंकि त्र भारत में नये समाज का निर्माण करना था तथा नई परिस्थितियों के अनुकूल बालकों का विकास करना था। माध्यमिक शिक्षा के सुधार हेतु आवश्यक व देने के लिये माध्यमिक शिक्षा आयोग (मुदालियर आयोग) का गठन हुआ आयोग ने अपने प्रतिवेदन में माध्यमिक शिक्षा के लिये बड़े स्पष्ट तथा वपूर्ण उद्देश्य निर्धारित किये। आयोग ने निम्नांकित उद्देश्यों का निर्धारण किया।भारत विश्व का सबसे बड़ा जनतांत्रिक देश है और जनतांत्रिक शासन प्रणाली ही कोमल होती है इसके असफल होने की अनेक सम्भावनायें रहती है। जनतंत्रात्मक शासन व्यवस्था की सफलता सफल नागरिको पर निर्भर करती जनतंत्र देश के लिये सत्यवादी स्वतंत्र तथा निष्पक्ष विचार वाले अनुशासित सहयोगी तथा उदार राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत नागरिकों की आवश्यकता पड़ती इन सभी बातों को ध्यान में रखकर आयोग में सिफारिश की कि माध्यमिक शिक्षा के छात्रों में इस प्रकार के आवश्यक गुणों का विकास करना चाहिये। क्षक के महत्व पर बल देते हुये भगवान दास कहते है शिक्षा बीज और जड़ है, सभ्यता फूल और फल है। यदि कृषक विवकेपूर्ण है और अच्छे बीज बोता तो समुदाय उत्तम दाने प्राप्त करता है और सम्पन्न होता है। यदि ऐसा नहीं, यदि वह झाड़ झंकार बोता है तो जहरीले बेर मिलते है और बिमारी व मृत्यु ल की होती है। हमारे कृषक शिक्षक हैं।आयोग की दृष्टि में यह माध्यमिक शिक्षा का ही कार्य है कि बालकों में उचित तथा आदर्श नेतृत्व का विकास । माध्यमिक शिक्षा को ऐसे नागरिक उत्पन्न करना है जो जनसाधारण का नेत्त्व जनतांत्रिक विधि से कर सके, उन्हें उचित मार्ग प्रदर्शित कर सके, जो हर में स्वयं बुद्धि तथा विवक से कार्य करें और जनसाधारण में सहयोग, सहकारिता तथा सामुदायिकता की भावना का विकास कर सकें। इन गुणों के विकास लिये आयोग ने माध्यमिक शिक्षा के पाठ्यक्रम में विभिन्न प्रकार के क्रियात्मक विषय तथा अन्य ऐसे विषयों का समावेशित करने का परामर्श दिया जो लकों में उपर्युक्त सभी गुणों का विकास कर सकेंजबकि जॉन डी०वी० के अनुसार ''शिक्षा जीवन की तैयारी के लिये नहीं बल्कि यह जीवन है। शिक्षा

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

अनुभवों के सतत् पुनर्निर्माण के माध्यम से जीने की प्रक्रिया है।" यह व्यक्तियों में उन सभी क्षमताओं का विकास करता है जो उनको अपने वातावरण नियंत्रण एवं सम्भावनाओं की पूर्ति हेतु सक्षम बनाता है। जैन दर्शन कहता है कि शिक्षा वह है जो मोक्ष प्राप्ति कराती है। बौद्ध दर्शन कहता है कि शि वह है जो निर्वाण दिलाती है। स्वामी विवेकानन्द कहते हैं कि मनुष्य की आत्मा में ज्ञान एक अक्षय भंडार है उसका उद्घाटन करना ही शिक्षा है। टैगोर के है कि उच्चतम शिक्षा वह है जो हमें केवल सूचना ही नहीं देती वरन् हमारे जीवन के समस्त पहलूओं को सम तथा सुडौल बनाती है। महात्मा गाँधी के है कि शिक्षा वह वस्तु या प्रक्रिया है जो मनुष्य को आत्मनिर्भर व निस्वार्थी बनाती है। रूसो कहता है कि शिक्षा बच्चे तथा मनुष्य के शरीर, मस्तिष्क आत्मा का सर्वोत्तम सर्वांगीण विकास है। फ्रोबेल कहता है शिक्षा एक प्रक्रिया है जो बालक के अन्तःशक्तियों को प्रकट करती है। महात्मा गाँधी कहते कि शिक्षा का अभिप्राय बालक एवं मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा में निहित सर्वोत्तम शक्तियों के सर्वांगीण प्रकटीकरण से है। टी0पी0 नन कहते हैं शिक्षा बालक के व्यक्तित्व का पूर्ण विकास है जिसके द्वारा वह यथा शक्ति मानव जीवन को मौलिक योगदान कर सकता है। पेस्टालाजी कहते हैं शिक्षा न को आंतरिक शक्तियों स्वाभाविक सर्वांगपूर्ण तथा प्रगतिशील विकास है। अरस्तू कहते हैं कि स्वस्थ शरीर में स्वस्थ का निर्माण करनी है शिक्षा है। हरबर्ट स्पे कहते हैं कि अच्छे नैतिक चरित्र का विकास ही शिक्षा है। ड्यो कहते हैं कि शिक्षा नियंत्रित वातावरण में मानव विकास की प्रक्रिया है। यूनिवर्सल डिक्श ऑफ इंग्लिस लैंग्वेज में शिक्षा का अर्थ दिशा गया है कि पालन, प्रशिक्षण देना विषय विकास मस्तिष्क का प्रशिक्षण चरित्र तथा शक्तियों की शिक्षा है। अँधेरे में छोटे बच्चों को प्रचलित निर्देश देना ही शिक्षा है। किसी राज्य में प्रचलित निर्देश प्रणाली शिक्षा कहलाती है।

अध्ययन का औचित्य:- समाज का शिक्षा पर प्रभाव और शिक्षा का समाज पर प्रभाव नकारात्मक नहीं जा सकता है क्योंकि समाज शिक्षा को ब करता है समाज के स्वरुप का प्रभाव शिक्षा की प्रकृति पर पड़ता है जैसा समाज का स्वरुप होगा वह शिक्षा को वैसे ही व्यवस्थित करता है। भारत लोकतांत्रिक देश है तो शिक्षा की प्रकृति उद्देश्य उसके संगठन एवं वातावरण में लोकतांत्रिक आदर्श प्रकृति होती है। तानाशाही हो समाज की शिक्षा में अनु व आज्ञाकारिता आदि पर बल दिया जाता है। समाजवादी देश की शिक्षा में समाजवादी तत्व व स्वरुप दिखायी देते हैं।

समाज की स्थिति व स्वरुप जैसे-जैसे बदलता जाता है वैसे-वैसे शिक्षा का रुप भी बदलता जाता है। भारत में आदि काल से धार्मिक शिक्षा दी थी इसके पश्चात् समय के साथ आधुनिक युग आया और देश ने राजतन्त्र से प्रजातन्त्र में प्रवेश किया और शिक्षा में लोकतांत्रिक आदर्श एवं मूल्यों को स्था किया गया सामाजिक असमानता, कुरीतियों एवं आर्थिक असमानता को दूर वर्ग विशेष के लिये शिक्षा व्यवस्था से सबके लिये शिक्षा को मुख्य लक्ष्य गया और सभी को शिक्षा प्राप्त करने का पूर्ण अधिकार प्राप्त कराया गया।

किसी भी समाज की राजनैतिक दशा का शिक्षा पर प्रभाव पड़ता है क्योंकि राजनीति को मजबूत आधार शिक्षा प्रदान करती है। अंग्रेज जब भारत तो उन्होंने अपने शासन को मजबूत देने के लिये शिक्षा व्यवस्था को अपने अनुसार ढालने का प्रयत्न किये जिसके लिये निस्यंदन का सिद्धान्त का अ करके आवश्यकतानुसार शिक्षा देने का प्रयास किये कम्पनी के संचालकों का विश्वास था कि प्रगति उस समय हो सकती है, जब उच्च वर्ग के उन व को शिक्षा दी जाये जिसके पास अवकाश हैं। वैदिक युग में राजतंत्र था तो शिक्षा वर्ग विशेष के लिये थी, परन्तु प्रजातांत्रिक शासन व्यवस्था में सभी वर्ग, लिंग, जाति, धर्म, रंग के लोगों को समान शिक्षा का अवसर दिया गया है। जिस समाज की आम तौर दशा अच्छी होती है वहाँ की शिक्षा व्यवस उसका प्रभाव पड़ता है। शिक्षा का प्रसार इसलिये अमीर को जैसे विकसित देशों में जल्दी हुआ। भारत जैसे देशों में आज भी शिक्षा के लिये जो खर्च चाहिये नहीं हो पा रहे हैं। आर्थिक रुप से सम्पन्न समाज अच्छे विद्यालय खोलने में सक्षम होता है जिसके फलस्वरुप व्यवसायिक, प्राविधिक, प्रौद्यो वैज्ञानिक आदि पक्षों का अधिक से अधिक विकास हेतु संसाधन उपलब्ध रहता है। आर्थिक रुप से विपन्न देशों में समाज की शिक्षा भी विपन्नता किये रहती है।

साहित्यावलोकन:- सम्बन्धित साहित्य सर्वेक्षण से अपने अध्ययन हेतु जाँच-पड़ताल होती है इसके अन्तर्गत हम इस बात का अध्ययन करते हैं कि द्वारा चुने गये क्षेत्र में कितना काम हो चुका है एवं किस प्रकार का काम हुआ है, अभी शोध का नया ट्रेंड क्या है आदि का। किसी भी प्रकार के श साहित्य पुनरावलोकन से इसके ज्ञान के क्षेत्र में अन्तराल का पता लगता है और परिभाषित क्षेत्र का भी पता लगता है। साहित्य पुनरावलोकन से हमें की स्थिति का पता चलता है और अपने अध्ययन की सीमा निर्धारित करते हैं। कम से कम पीछे 10 वर्षों के अध्ययन को पुस्तकों, शोध प्रबन्धों, पत्र-पत्रि का ऑफलाइन तथा आनलाइन अवलोकन करते हैं।

सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण से तात्पर्य उस अध्ययन से है जो शोध समस्या के चयन के पहले अथवा बाद में उस समस्या पर पूर्व में किये गये कार्यों, विचारों, सिद्धान्तों, कार्यविधियों, तकनीकी, शोध के दौरान होने वाली समस्यायों आदि के बारे में जानने के लिये किया जाता है। सम्बन्धित स का सर्वेक्षण दो प्रकार से किया गया है। समस्या चयन से पहले को पारम्भिक तथा शोध प्रक्रिया में आंकड़ा संकलन से पहले व्यापक सर्वेक्षण किय था।

सदेही इब्राहिम (1970): "पिछले 50 वर्षों से शिक्षक की शिक्षण दक्षता पर अध्ययन हो रहे है जिसमें उसके व्यक्तित्व, विशेषतायें, शिक्षण वि शिष्य विकास, कक्षा अन्तर्क्रिया, नेतृत्व क्षमता, शाब्दिक व्यवहार, शारीरिक भाषा, हावभाव इत्यादि यह प्रकाश डाला गया। विषय और समायोजन पर जोर दिया गया शिक्षण प्रभावशीलता पर अध्ययन हुये सभी सकारात्मक दिशा में थे।"

कोलिन्सन (1999): "यह एक मेटारिसर्च है जो पीछे 100 वर्षों के अध्ययनों में शिक्षक की परिभाषा का अवलोक हुआ जिससे यह पाया गय गुणवत्ता का ह्रास होता है जब योग्यता में एक क्रम से विकास तकनीकि हुआ और शिक्षक तकनीकि योग्यता को बढ़ा दी जाय और रिफ्रेसर इत्यादि व्यवस्था की जानी चाहिये जिससे शिक्षक की नयी परिभाषा बने।

डार्लिंग हैमेड एल0 (2000): "यह अध्ययन शिक्षक की गुणवत्ता से जुड़ा हुआ है और शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करता है। शिक्षक को में के साथ जवाबदेह बनता है तो उसकी प्रतिबद्धता बनी रहती है जिससे शिक्षक की गुणवत्ता छात्र उपलब्धि को प्रभावित करती है क्योंकि सीखने व स की विधियों को तलाश कर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाता है।

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

सिंह, सुनील (2001): "वर्तमान वैश्वीकृत युग में उच्च शिक्षा संस्थानों को सही प्रदर्शन और विकास सुनिश्चित करने के लिए कर्मचारी क्षमता पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है। एक सही योग्यता विकास के लिये जोर दे सकती है और इस प्रतिस्पर्धी युग में दुनिया में सबसे विकसित [illegible] सकती है। शिक्षण समुदाय को न केवल उत्पादक के कारक के रूप में माना जाता है बल्कि एक राष्ट्र के साथ-साथ एक जाति के भाग्य निर्माण में महत्वपूर्ण है। सही योग्यता सफल और उच्च शिक्षण संस्थानों के लिये प्रतिस्पर्धात्मक लाभ पैदा करने का स्रोत है इसलिये कर्मचारियों और शिक्षकों के बीच सही योग्यता के विकास और मूल्यांकन के लिये सही नीतियों और रणनीतियों की पहचान और विकास पर ध्यान देना चाहिए। शिक्षक का प्रदर्शन [illegible] नीति और अनुसरण की जाने वाली नीति पर निर्भर करता है। एक [illegible] उपकरण के रूप में [illegible] द्वारा पैदा किये जाने वाले संगठनात्मक और मनोवैज्ञानिक वातावरण, प्रेरक तरीके आदि। इस लेख का उद्देश्य सरकारी सहायता प्राप्त व स्ववित्तपोषी संस्थानों में कार्यरत पुरुष व महिला शिक्षकों के बीच शिक्षण योग्यता के घटकों को उजागर करना है। इस उद्देश्य के लिये राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र भारत में सरकारी सहायता प्राप्त और स्ववित्तपोषी विश्वविद्यालय से संबद्ध कालेजों में पुरुष और महिला शिक्षकों के बीच अलग अलग रेटिंग एप्टीट्यूड सर्वेक्षण किया गया था। परिणामों के विश्लेषण से पता चला कि महिला शिक्षकों की तुलना में पुरुष शिक्षकों में औसत योग्यता रेटिंग अधिक है। सरकारी सहायता प्राप्त कालेजों में पुरुष शिक्षक स्ववित्तपोषी की तुलना में अधिक है। पुरुष व महिला शिक्षक भी अलग अलग है।"

अध्ययन का उद्देश्यः- प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्री द्वारा अध्ययन के उद्देश्य निर्धारित किया गया था कि, "माध्यमिक स्तर पर क्षेत्र के आधार पर शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता तुलनात्मक अध्ययन करना।"

शोध अध्ययन की परिकल्पनाः- उद्देश्य की पूर्ति हेतु शून्य परिकल्पना निर्मित की गई थी कि "माध्यमिक स्तर पर ग्रामीण तथा शहरी शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता में सार्थक अन्तर नहीं है।"

शोध विधिः- प्रस्तुत अध्ययन विवरणात्मक प्रकार का अध्ययन है। जिसमें वर्तमान से सम्बन्धित घटनाओं का विश्लेषणात्मक विवरण होता है [illegible] सर्वेक्षण विधि के तहत आंकड़ों का संकलन करते हुए निरीक्षण किया जाता है। जिसमें आंकड़ों की सहायता से वर्तमान घटनाओं पर प्रकाश डाला जाता है।

समष्टिः- किसी अध्ययन की वह सम्पूर्ण ईकाई समष्टि कहलाती है। जिस पर शोध कार्य आधारित होता है। प्रस्तुत अध्ययन जनपद जौनपुर के [illegible] माध्यमिक स्तर पर अध्यापन करने वाले शिक्षक ही समष्टि के रुप में परिभाषित किये गये थे।

न्यायदर्शः- शोधकर्त्ता द्वारा समय धन के अभाव के कारण आगमनात्मक प्रविधि अपनाते हुए समष्टि से एक छोटा समूह अध्ययन हेतु चयनित किया [illegible] है। जिसे न्यायदर्श कहते है। न्यायदर्श पूरी समष्टि का प्रतिनिधित्व करता है। प्रस्तुत अध्ययन में जौनपुर जनपद के यादृच्छिक न्यायदर्श विधि द्वारा कुल [illegible] सौ अध्यापकों का चयन किया गया था जिनके वितरण का आधार क्षेत्र, लिंग, विषय तथा वित्तपोषण था।

तालिकाः न्यायदर्श में चयनित माध्यमिक विद्यालय का वितरण

क्र0सं0	माध्यमिक विद्यालय	पुरुष अध्यापक	महिला अध्यापक	कुल
1.	राजा हरपाल सिंह इण्टर कालेज सिंगरामऊ, जौनपुर	36	04	40
2.	संग्राम बालिका इण्टर कालेज बदलापुर, जौनपुर	--	38	38
3.	श्री गणेश राय इण्टर कालेज डोभी, जौनपुर	38	03	41
4.	पब्लिक कन्या इण्टर कालेज केराकत, जौनपुर	--	24	24
5.	तिलकधारी इण्टर कालेज, जौनपुर	40	03	43
[illegible]	मुक्तेश्वर बालिका इण्टर कालेज, जौनपुर	--	36	36
[illegible]	तिलकधारी बालिका इण्टर कालेज, जौनपुर	--	18	18
[illegible]	हरिहर सिंह पब्लिक इण्टर कालेज, जौनपुर	12	13	25
[illegible]	नेहरु बालोद्यान इण्टर कालेज, जौनपुर	10	14	24
[illegible]	गोवर्द्धन इण्टर कालेज, मुफ्तीगंज, जौनपुर	15	--	15
[illegible]	सिरसी इण्टर कालेज, बरईपार, जौनपुर	18	04	22
[illegible]	जर्नादन इण्टर कालेज, खपड़हा, जौनपुर	15	02	17
[illegible]	राजा श्री कृष्णदत्त इण्टर कालेज, जौनपुर	15	08	23
[illegible]	मो0 हसन इण्टर कालेज, जौनपुर	10	12	22
[illegible]	सल्तनत बहादुर इण्टर कालेज, बदलापुर, जौनपुर	12	00	12
		221	179	400

प्रस्तुत अध्ययन में आंकड़ों के सकलन हेतु दो शोध उपकरण मानकीकृत किये गये थे।

शोध उपकरणः- [illegible]

शिक्षण अभिक्षमता मापनीः- शिक्षण अभिक्षमता मापनी का निर्माण शोधकर्त्री ने स्वयं किया है जिसके लिये कुल 68 कथन बनाया था। यह तीन [illegible] मानकीकरण हेतु 370 लोगों पर प्रशासित करके उन पर के 29: तथा नीचे के 27: लोगों के [illegible] [illegible] सहमत, अनिश्चित तथा असहमत पर बना है।

से प्रत्येक कथन का टी० विश्लेषण किया जो .05 स्तर पर सार्थक था उसे चयनित किया गया इसमें कुल 50 कथन अंतिम प्रारूप में [illegible] की विश्वसनीयता गुणांक स्पिलिट हाफ मेथड से 0.84 प्राप्त हुआ और वाह्य वैधता के शिक्षण अभिक्षमता मापनी से वैधता गुणांक [illegible] के रूप में टी० परीक्षण को माना गया मापन हेतु सकारात्मक कथनों के लिए क्रम संख्या (2, 1, 0) (सहमत, अनिश्चित तथा असहमत) व [illegible] के लिए (0, 1, 2) क्रम परीक्षण के सकारात्मक कथन (1, 4, 5, 7, 9, 12, 13, 14, 15, 20, 22, 25, 28, 30, 31, 32, 33, [illegible] 50 - 23) तथा नकारात्मक कथन (2, 3, 6, 8, 10, 11, 16, 17, 18, 19, 21, 23, 24, 26, 27, 29, 34, 35, 36, 37, 38, 43, [illegible] 48 - 27) है। न्यूनतम अंक 0 और अधिकतम अंक 100 आ सकता है।

उद्देश्य से सम्बन्धित विश्लेषण तथा व्याख्या: शोधकर्त्री द्वारा प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य निर्धारित किया गया था कि, "माध्यमिक स्तर पर पुरुष एवं महिला शिक्षकों के शिक्षण अभिक्षमता तुलनात्मक अध्ययन करना।" इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु शून्य परिकल्पना बनायी गयी थी कि, "माध्यमिक स्तर पर पुरुष तथा महिला शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता में सार्थक अन्तर नहीं है।" इस शून्य परिकल्पना के परीक्षण हेतु निम्नलिखित विश्लेषण तालिका [illegible]

तालिका: पुरुष तथा महिला शिक्षकों के शिक्षण अभिक्षमता सम्बन्धी सी०आर० मूल्य विश्लेषण

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	सी०आर०मूल्य
पुरुष शिक्षक	257	68.75	15.24	1.83	3.63
महिला शिक्षक	143	62.13	19.36		

df (398) at .01 = 2.60

उपरोक्त विश्लेषण तालिका से स्पष्ट है कि शिक्षण अभिक्षमता पर पुरुष शिक्षकों के मध्यमान 68.75 तथा मानक विचलन 15.24 जबकि महिला शिक्षकों के मध्यमान 62.13 तथा मानक विचलन 19.36 है। मानक विचलनों की सहायता से अभिकलित मानक त्रुटि 1.83 प्राप्त हुयी। अभिकलित सी०आर० मूल्य 3.63 प्राप्त हुआ जो स्वतंत्र संख्या 398 के सार्थकता स्तर .01 पर सारणी मान 2.60 से अधिक है जिसके आधार पर बनायी शून्य परिकल्पना "माध्यमिक स्तर पर पुरुष तथा महिला शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता में सार्थक अन्तर नहीं है।" निरस्त हो जाती है। जिससे स्पष्ट होता है कि पुरुष शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता महिला शिक्षकों की तुलना में अधिक होती है। इस परिणाम का समर्थन शर्मा (2016) का अध्ययन करता है।

प्रस्तुत परिणाम के सम्भवतः कारण है कि पुरुष शिक्षक बहिर्मुखी स्वभाव के होते हैं और समाज में विचरते रहते हैं उन्हें किसी तथ्य को [illegible] अच्छे से आता है।

शोध निष्कर्ष- विश्लेषणोपरान्त प्रस्तुत अध्ययन का शोध निष्कर्ष प्राप्त किया गया। पुरुष शिक्षकों में शिक्षण अभिक्षमता महिला शिक्षकों की तुलना में [illegible] होती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. रामशकल पाण्डेय- 'शिक्षा का इतिहास' विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।
2. एस० पी० गुप्ता- 'भारतीय शिक्षा का ताना-बाना' शारदा पुस्तक प्रकाशन इलाहाबाद।
3. एस० पी० गुप्ता- 'भारतीय शिक्षा की समसामयिक समस्यायें' शारदा पुस्तक प्रकाशन इलाहाबाद।
4. के० एस० पाण्डेय- 'शिक्षा पर विभिन्नवाद' शोधपत्र कान्फ्रेंस राजा हरपाल सिंह महाविद्यालय सिंगरामऊ, जौनपुर।
5. बिंघम (1937): 'शिक्षण अभिक्षमता' उद्धृत एस०पी० गुप्ता (2005) आधुनिक मापन तथा मूल्यांकन, पेज 145-147 शारदा पुस्तक प्रकाशन इलाहाबाद
6. जी० सी भट्टाचार्य: "अध्यापक शिक्षा" वाराणसी, वसुन्धरा प्रकाशन, 2008 पृ० सं०-47।
7. सदंरी इब्राहिम (1970): "टीचर इफेक्टिवनेस आर क्लासरूम इफीसियेंसी ए न्यू डायरेक्सन इन द इवैल्युवेशन ऑफ टीचिंग" जर्नल ऑफ टीचर एजुकेशन [illegible] जर्नल्स।
8. कोलिन्सन (1999): "शिक्षक परिभाषा को पुर्नवीकरण" अभ्यास के सिद्धान्त 38 (1), 4-11।
9. डार्लिंग हैमंड एल० (2000): "शिक्षक की गुणवत्ता और छात्र उपलब्धि" शिक्षा नीति विश्लेषण अभिलेखागार 8।
10. सिंह, यू०पी० (2001): "एन० सी० आर० में सरकारी सहायता प्राप्त व स्ववित्तपोषी कालेजों के बीच शिक्षण योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन" [illegible] एन्यू०इन० ICFAI।
11. डेसिमोन एल० (2002): "शिक्षकों के निर्देश पर व्यवसायिक विकास के प्रभाव" शिक्षा मूल्यांकन और नीति विश्लेषण 24 (2), 1-112।
12. वायड, डी० (2006): "शिक्षक कार्यबल व छात्र उपलब्धि में सम्बन्ध" शिक्षा वित्त व नीति 1 (2), 176-216।
13. क्लार्ट फोस्टर (2006): "शिक्षक छात्र मिलन" जर्नल्स ऑफ ह्यूमनरिसोर्स 41 (4) 778-820।
14. सीडेल टीना (2007): पिछले दशक में शिक्षण प्रभावशीलता अनुसंधान मेटा विश्लेषण परिणामों को अलग करने में सिद्धांत और अनुसंधान शिक्षा [illegible] जर्नल्स http://doi.org/10-3102/003465407310317A

Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner